पंडवानी

सुधीर शर्मा

भारत के अन्य हिंदी प्रदेशों की तरह छत्तीसगढ़ में भी अनेक लोकगाथाओं का प्रचलन है, जिसमें पंडवानी अत्यंत लोकप्रिय है। लोक गायिका तीजनबाई ने इसे दुनिया भर में लोकप्रिय कर दिया है। पंडवानी के साथ छत्तीसगढ़ की संस्कृति और छत्तीसगढ़ी भाषा का भी प्रसार हुआ है। पंडवानी को छत्तीसगढ़ की स्थानीयता ने उसे कर्णप्रिय बना दिया है। लोकगाथाएँ गेय होती हैं और संगीत उसके लिए पृथक प्रभावोत्पादकता है। न केवल पांडवों, अपितु महाभारत के पवित्र चरित्रों और चुनिंदा घटनाओं का गुणगान ही पंडवानी का लक्ष्य रहा है। एक ओर जहाँ मनोरंजन है तो दूसरी ओर ज्ञान। पंडवानी के बहाने छत्तीसगढ़ का जनमानस नैतिकता और धर्म की मर्यादाओं की सीख लेता है। वह अपनी लोकगाथाओं को जीवन के अंग बनाने की कोशिश करता है। यही कारण है कि पंडवानी सहित अन्य लोकगाथाओं में पीढ़ी-दर-पीढ़ी कथा के प्रस्तुतीकरण में बदलाव दिखायी देता है।

मूलतः पंडवानी एकल नाट्य है। छत्तीसगढ़ की परधान तथा देवार और कुछ अन्य जातियों में पंडवानी गायन की परंपरा विद्यमान है। लोकवाद्य यंत्र किंकनी, तमूरा, रुँझ, आदि पंडवानी के प्रस्तुतीकरण को आकर्षक बनाते हैं। परधान गायक गोंड राजाओं की स्तुतियाँ और वीरगाथाएँ गाया करते थे। इसलिए परधान जाति की पंडवानी में महाभारत की कथा के साथ-साथ गोंड मिथकों का भी मिश्रण मिलता है। पंडवानी का नायक भीम है। भीम ही अधिकतर विपत्तियों में पांडवों की रक्षा करते थे। लोक की परिवर्तन-प्रवृत्ति ने न केवल महाभारत के अनेक पात्रों के नाम बदल दिये, अपितु स्थान नाम भी परिवर्तित हो गये। यही कारण है कि कुंती माता कोतमा, गाँधारी गंधारिन और हस्तिनापुर हसना नगरी हो गये। वर्तमान में पंडवानी एक प्रदर्शनकारी लोककला है और झाडूराम देवांगन के बाद तीजन बाई, ऋतु वर्मा, चेतन देवांगन आदि से लेकर अनेक नये गायक-गायिकाओं ने पंडवानी को जीवंत किया है।

आलोचक डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव ने छत्तीसगढ़ी कथागीतों पर वृहद शोधकार्य किया है, जिनकी पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है। वे लिखते हैं कि यदि हम पंडवानी कथागायन करने वाले कुछ चर्चित कलाकारों के विषय में जानकारी प्रस्तुत करें तो विगत डेढ़ दो सौ वर्षों की कथागायन की अटूट परंपरा को समझा जा सकता है। सन् 1884 में ग्राम झीपन जिला रायपुर में जन्मे स्व. नारायण लाल वर्मा ने 1896 से ही मंच पर पंडवानी गायन प्रारंभ कर दिया था। वे अपने भांजे के साथ गायन करते थे। अतः उनकी प्रसिद्धि 'मामा-भांजा' के नाम से ही थी। वे पुरानी शैली की पंडवानी गाते थे। ज्ञात इतिहास में उन्हें पंडवानी गायन कला का पूर्व पुरुष स्वीकार किया जा सकता है। बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में ग्राम पंडरिया (गंडई) के पंडवानी गायक स्व. बोधीराम यादव की भी प्रसिद्धि थी। दशरथ यादव जैसे शौकिया कलाकार ने उनसे कथा गायन सीखा। साहित्यकार डॉ. अनिल भतपहरी सुखबती मुनगी को प्रथम महिला पंडवानी गायिका मानते हैं। साथ ही वे सतनाम पंथ में पंडवानी की परंपरा का उदाहरणों के साथ भी उल्लेख करते हैं। सतनाम पंथ में यह सत्य की जयगाथा है। यही कारण है कि शांतिबाई चेलक, उषा बारले आदि जैसे अनेक पंडवानी

गायक सतनामी समाज से मिलते हैं। इसलिए अब यह संदर्भ भी अधूरा लगता है कि पंडवानी केवल दो-तीन जातियों तक ही सीमित थी। झाडूराम देवांगन पर एक मोनोग्राफ लोक-विशेषज्ञ श्री नंदकिशोर तिवारी ने तैयार किया था। झाडूराम देवांगन के अलावा पूनाराम निषाद, पंचूराम, खूबलाल यादव जैसे अन्य नाम भी मिलते हैं।

डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव भी मानते हैं कि स्व. झाडूराम देवांगन ने पंडवानी को नया रूप दिया। उनके समय में पंडवानी को पुरानी शैली के गायक इतवारी राम साहू की चुनौती स्वीकार करके उन्होंने सबल सिंह चौहान के महाभारत के आधार पर पंडवानी की नयी शैली विकसित की और उसे बेदमती नाम दिया। अपने बाँसिन ग्राम से लेकर देश की राजधानी और विदेशों तक उन्होंने इस लोक गायन को विस्तार दिया। पूनाराम निषाद जैसे प्रसिद्ध कलाकार उनसे ही प्रेरित और प्रभावित हुए, उन्होंने अपने पिता लछमण निषाद से भजन गायन की शिक्षा ली थी। वे पहले नदौरी ग्राम के भीखम सिंह बंछोर की शैली में गायन करते थे। कालांतर में प्रसिद्ध नाटककार हबीब तनवीर के निर्देशकीय परामर्श से उनकी प्रस्तुति में चमक पैदा हुई। उनके गायन की विशेषता उनकी सहजता और स्वाभाविकता है। ग्राम अटारी (पाटन) की तीजनबाई आज पंडवानी की पर्याय मानी जाती हैं, उन्हें गनियारी निवासी अपने नाना ब्रजलाल पारधी से गायन की प्रेरणा मिली। अपनी प्रतिभा से उन्होंने पंडवानी गायन को एक नया आयाम दिया। ग्राम देवरी के पंडवानी गायक रेवाराम साहू ने बारह वर्ष की उम्र में 1958 में पहला कार्यक्रम प्रस्तुत किया। युवा पीढ़ी की प्रसिद्ध पंडवानी गायिका रितु वर्मा ने अपने ही ग्राम रूआबांधा में मात्र सात वर्ष की अवस्था में पहला कार्यक्रम प्रस्तुत किया, उन्होंने सिल्हाटी के गुलाबदास मानकपुरी से गायन विद्या प्राप्त की। ग्राम रनचिरई की मीराबाई साहू को तुलसी साहू से गायन की प्रेरणा मिली। झालम ग्राम के खम्मन लाल अस्तूरे ने बहुरन दास निर्मलकर और संजीवन प्रसाद चौबे के निर्देशन में पंडवानी गायन की अपनी कला को निखारा। पंडवानी की अबाध लोकप्रियता के विषय में हबीब तनवीर ने कहा था कि 'पंडवानी' एक प्रिमिटिव कथा है। इसमें पांडवों की चरित्र गाथा कही जाती है। धर्म के साथ संस्कृति, इतिहास, पुराण, कला, साहित्य, दर्शन, और कूटनीति को रोचक बानगी के साथ पंडवानी गायक प्रस्तुत करते हैं। इसकी तपिश गहरी है, जो ग्रंथ की प्रासंगिकता को अधिक महत्वपूर्ण बना देती है। जनता के बीच महाभारत की गहरी पैठ है, इस कारण भी पंडवानी लोकप्रिय होती जा रही है।

महाभारत को पंडवानी शैली में प्रस्तुत करने वाले दलों की संख्या अब एक सवा सौ से अधिक हो चुकी है। वर्तमान में यह यू-ट्यूब पर भी आ चुका है और अनेक कैसेट बनाये जा रहे हैं। स्वयं पंडवानी गायिक उषा बारले कहती हैं कि उन्होंने गुरु घासीदास की जीवनगाथा को पंडवानी शैली में ढाल लिया है और उसके कैसेट भी बन गये हैं। इससे यह ज्ञात होता है पंडवानी के प्रस्तुतीकरण की शैली ने मूल कथा से इतर एक प्रदर्शनकारी कला का नया रूप धर लिया है।

छत्तीसगढ़ में पंडवानी गायन की दो शैलियाँ प्रचलित हैं—वेदमती और कापालिक। पंडवानी की शैली निर्धारण में श्री नंदकिशोर तिवारी का मंतव्य है कि "कापालिक तथा वेदमती की मौखिक परंपरा के पंडवानी गायक सामान्यतः खड़े होकर ही पंडवानी का गायन करते हैं। वहीं दूसरी शाखा के पंडवानी गायक बैठकर पंडवानी

गाते हैं।" पंडवानी की वेदमती तथा कापालिक शाखाओं का दर्शनीय समिश्रण तीजनबाई ने प्रस्तुत किया। वेदमती शाखा के अन्य गायक मंच पर बैठकर अपना गान अभिनय प्रस्तुत करते हैं, वहीं तीजनबाई ने मंच पर खड़े होकर पंडवानी गायन किया। कापालिक शाखा की पंडवानी में लोक प्रचलित किवदंतियों और स्थानीय अतीत की स्मृतियों को कुशलतापूर्वक मूल आख्यान में मिला दिया जाता है। पंडवानी की गायन शैलियों पर और भी विभिन्न विद्वानों के विचार दृष्टव्य हैं।

पंडवानी को छत्तीसगढ़ी कथा गायन का सिरमौर कहा जाता है और इसकी लोकप्रियता ने इसे और अधिक उच्च स्थान पर स्थापित कर दिया है। कथा गायन की इस विशिष्ट परंपरा में गायन, कथोपकथन, संगीत और अभिनय का अनोखा रसायन है। यही कारण है कि आज के टीवी और मोबाइल के विकराल समय में भी सैकड़ों लोग इसे न केवल गाँवों में अपितु बड़े महानगरों तथा विदेशों में भी देखने-सुनने आते हैं। पंडवानी की प्रसिद्धि का एक सार्वभौमिक कारण तो महाभारत की रोचक और सशक्त कथा है, जो अपनी कई लोक वाचनाओं के माध्यम से इतना विस्तार पा चुकी है कि देश के विभिन्न हिस्सों में कई कलारूपों में तथा कश्मीर से केरल तक लोक-संस्कृति में उपस्थित हैं। छत्तीसगढ़ में पल्लवित होकर उसने छत्तीसगढ़ के जन-जीवन को आत्मसात किया। उसके पात्र और उसकी घटनाओं में छत्तीसगढ़ की संस्कृति की स्पष्ट झंकार है। उसकी संरचना में इस अंचल की परंपराओं का भराव है। पंडवानी के इस रूप में महाभारत की कथा की बुनावट नहीं है, जो आज गायी जाने वाली पंडवानी का मूल आधार है। आज की पंडवानी महाभारत की कथा का चंपू शैली में गायन है।

नंदकिशोर तिवारी पंडवानी गायन में रंगकर्म के प्राचीनतम लक्षण देखते हैं–"पंडवानी का नाम कैसे प्रचलित हुआ है और इसकी गायन परंपरा कब से प्रारंभ हुई, यह बता पाना तो कठिन है, किंतु जिस रूप में पंडवानी छत्तीसगढ़ में प्रचलित है वह किसी दूसरे अंचल में नहीं मिलती। यहाँ तक कि किसी दूसरे अंचल में कौरव-पांडव का एकल कथागायन, जिसमें प्रिमिटिव थियेटर के गुण हों, का कोई प्रमाण नहीं मिलता।"

छत्तीसगढ़ी कथागीत में उल्लेख किया गया है कि छत्तीसगढ़ की जिस पंडवानी की प्रसिद्धि देश-विदेश में है वह पुरानी पंडवानी का स्थानापन्न कलारूप है। वर्तमान में प्रचलित पंडवानी महाभारत की कथा पर आधारित है, जिसके जनक छत्तीसगढ़ के महान लोक गायक स्व. झाड़ू राम देवांगन माने जाते हैं। झाड़ूराम देवांगन ने दंत कथाओं से युक्त पुरानी पंडवानी को नया रूप दिया। इस तरह वे एक अत्यधिक लोकप्रिय लोकगायिकी के प्रवर्तक बने। महाभारत की रोचक कथा को अभिनय का स्पर्श देकर दर्शनीय बनाने का कार्य उन्होंने किया। यह अपने-आप में एक मौलिक महाकाव्य है। सबल सिंह का वही महाभारत छत्तीसगढ़ी पंडवानी गायिकी को हम उसके भावानुवाद के निकट मान सकते हैं, किंतु चंपू शैली के इस प्रस्तुतीकरण की अपनी मौलिकता है, जो श्रेष्ठ कलाकार की कल्पना और भाषा प्रवाह का स्पर्श पाकर अपनी आभा विकीर्णक करती है।

पंडवानी के इस नये रूप के संबंध में डॉ. नंदकिशोर तिवारी लिखते हैं "हरेली तिहार (त्यौहार) का दिन था। गाँव में श्री इतवारी साहू पंडवानी गा रहे थे। उसी दिन 'कर्रा कसुआ दानव' का प्रसंग चल रहा था। पंडवानी

गायक इतवारी साहू शास्त्र सम्मत प्रसंग को छोड़कर दंत कथाओं की लीक पर चल रहे थे। गायिकी में न ओज न माधुर्य। झाडू राम देवांगन से सहा नहीं गया और उन्होंने पंडवानी गायक साहू की आलोचना कर दी। साहू ने चुनौती दे दी। इस तरह वे प्रस्तुतीकरण को बदलना चाहते थे। स्व देवांगन ने पंडवानी के प्रस्तुतीकरण में अनेक प्रयोग किये, जो सफल भी हुए।"

लोक गायक और स्वयं कलाकार डॉ. पीसी लाल यादव ने पंडवानी पर पीएच.डी. किया है। वे लिखते हैं कि "छत्तीसगढ़ में अनेक लोक-गाथाएँ प्रचलित हैं, लेकिन सर्वाधिक या लोक प्रिय लोक-गाथा पंडवानी ही है। विषय की दृष्टि से, पात्रों की दृष्टि और आकार की दृष्टि से भी।" हालांकि पंडवानी का संबंध महाभारत से है, किंतु स्थानीय परिवेश और स्थानीय लोक-परंपराओं के रंग में रंगी होने के कारण यह उतनी ही भिन्न भी है। पंडवानी की लोकप्रियता उसकी ऐतिहासिकता, अध्यात्म या दर्शन में नहीं हैं, बल्कि उसकी जन रंजकता में है। महाभारत की कथा तो ऐतिहासिक सत्य है। महाभारत को यदि हम इतिहास की जननी कहें, तो यह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यह अनेक ऐतिहासिक विषयों की जन्मदात्री है-महाभारत कथा। स्वयं भगवान वेदव्यास का मंतव्य है-" महाभारत धर्म ग्रंथ है, राजनीति दर्शन, निष्काम कर्म योग दर्शन है, भक्ति शास्त्र, अध्यात्म शास्त्र है, आर्य जाति का इतिहास है और सर्वार्थ सार्थक तथा सर्व शास्त्र संग्रह है और इन्हीं गुणों के कारण महाभारत एक महाकाव्य है।" जबकि "पंडवानी की ऐतिहासिकता का कोई प्रमाण नहीं है कि यह कब से गायी जा रही है। पंडवानी महाभारत के इतिहास को संजोती है। इसे पंडवानी गायक अपनी टूटी-फूटी भाषा में रूपांतरित करता है।"

कतिपय विद्वानों का मत है कि पंडवानी गायन छत्तीसगढ़ की मूल परंपरा नहीं है, यह आयातित है। कुछ लोगों का विश्वास है कि "लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व छत्तीसगढ़ में हैहयवंशी राजा राज करते थे। इसी वंश में कीर्तिवीर्य या सहस्रबाहु हुए उन्हें चेदिराज कहा जाता है। महाभारत के 18 प्रधान राजाओं में चेदिराज के नाम का उल्लेख मिलता है। इसके विपरीत कुछ एक इतिहासकारों का मत है, पाँचवीं सदी में छत्तीसगढ़ में पांडव वंशीय राजा राज करते थे, किंतु यह महाभारत कालीन पांडव वंश नहीं है। रायपुर और बिलासपुर में इस वंश के बहुत ताम्र पत्र और लेख मिले हैं। सबसे प्राचीन बहुमनी ग्राम का ताम्रपत्र है। जिससे वाकाटकों से पांडवों के संबंध का पता लगता है।

इसी प्रकार मोरध्वज की कथा को रतनपुर (बिलासपुर) से जोड़ा जाता है। रतनपुर में कृष्णार्जुनी तालाब है। कहा जाता है कि कृष्ण और अर्जुन ने इस अंचल की यात्रा की थी। उन्हीं की स्मृति में यह तालाब खुदवाया गया है। आज भी सपुन्नी (माधी पूर्णिमा) के दिन यहाँ मेला भरता है। हजारों की संख्या में लोग इस पवित्र तालाब में स्नान कर अपना जन्म धन्य करते हैं।

पंडवानी की वर्तमान शैली से कुछ उदाहरण भी देखें, जिससे छत्तीसगढ़ी की संप्रेषणीयता का भी प्रमाण मिलता है। भीम इनकी कथा का नायक है, जिसका चरित्र मिथकीय प्रभाव व स्थानीय परिवेश के अनुसार उपस्थित होता है, इनकी कथा का आकर्षण भीम का पराक्रम, बुद्धि चातुर्य, हास-परिहास और विशालकाय शरीर है, जो श्रोता को चैतन्य बनाये रखता है। एक कथा प्रसंग प्रस्तुत है, जिसमें भीम द्वारा अमृत पीकर

कुंड खाली कर देने के पश्चात् वासुकी और भगवान के द्वारा अमृत वापस प्राप्त करने की मानवीय साजिश की गयी थी–

“वासुका रे राजा

सोये हवै भइया

जाऊ देखी आवो

बोलिस है सतजोगन कैना

ये ढंग भिम्मा से भाई

कुंड के अमृत ल ददा

चार चुल्लू म भइया

सुड़ुक ले सुड़ुक डारिस भइया

सूख गईस कुंड रे भइया।”

लोक-गाथाओं में संगीत अनिवार्य रूप से रहता है। बिना संगीत के माध्यम से लोक-गाथाओं के महत्व को हम नहीं समझ सकते हैं। लोक-गाथाओं में साहित्य का अभाव रहता है। उनमें सूक्ष्म भावों की अभिव्यंजना नहीं पायी जाती। अतएव संगीत ही लोक-गाथाओं को भावपूर्ण एवं सुमधुर बनाता है। पद्मश्री पूनाराम निषाद दुर्ग जिला के रिंगनी के थे, उन्होंने नया थियेटर में पंडवानी का प्रस्तुतीकरण किया। यहाँ हबीब तनवीर अपने नाटकों के मध्य पंडवानी का प्रयोग कर नाटकों में नवाचार करते थे, जो अत्यंत लोकप्रिय भी हुए। आंचलिकता के साथ पंडवानी का प्रस्तुतीकरण इनकी विशेषता भी थी। इधर तीजनबाई ने अपनी विशिष्ट अभिनय शैली और दबंग प्रस्तुति से पंडवानी को और अधिक आकर्षक तथा संप्रेषणीय बना दिया। इस तरह पंडवानी ने यह साबित किया है कि महाभारत सदैव से प्रदर्शनकारी कला विशेषकर लोककला की वस्तु है और एक कथा गायक के माध्यम से आप महाभारत के भीतर झाँककर उस युग में प्रवेश कर सकते हैं।

सुधीर शर्मा, हिंदी विभाग,

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

भिलाई, छत्तीसगढ़